□□□□□□□ □□ □□□□□□

द्वारा लिखित सी.आई.सी.एम.
मंगलवार, 29 अगस्त 2006 16:57 - अंतिम अद्यतन गुरुवार, 20 मार्च 2008 18:57

- □□□□□□□□□□ □□ □□□□□□□□□

(अ) मनुष्य को परमेश्वर ने अपने स्वरूप एवं समानता में सृजा है ताकि वह परमेश्वर के साथ संगति एवं महिमा करे। (उत्पत्ति 1:26-30)

(ब) परमेश्वर मनुष्य की आज्ञाकारिता चाहता है (उत्पत्ति 2:16-17)

- □□□□□□□□ □□ □□□□□□□□□ (□□□)

(अ) मनुष्य ने पाप करके परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन किया है (उत्पत्ति 3)

(ब) पाप शारीरिक एवं आत्मिक मृत्यु लेकर आया अर्थात् पवित्र परमेश्वर से अलगाव (यशायाह 59:2)

(स) सब मनुष्यों ने पाप किया है एवं परमेश्वर की महिमा से रहित हैं। (रोमियों 3:23, 5:12)

(द) पाप की मजदूरी मृत्यु है

(रोमियों 6:23, इब्रानियों 9:27, प्रकाशित वाक्य 20:15)

(इ) पापों की क्षमा हेतु रक्त बहाए जाने की आवश्यकता होती है। (इब्रानियों 9:4)

(फ) भटके हुओं की अंतिम नियति है परमेश्वर से सदा-सदा के लिए अलगाव (यूहन्ना 3:18,26 यहूदा 1:7; 2 थिस्सलुनीकियों 1:8-9)

तथ्य। पवित्र शास्त्र के अनुसार चूंकि सब मनुष्य पापों में मरे हुए हैं तथा परमेश्वर से दूर हैं (इफि. 2:1-12) तो कैसे मनुष्य परमेश्वर के साथ सही संबंध पुनः स्थापित कर सकता है।

- □□□□□□□□□□ □□ □□□□□□□ (□□□□□□□)

(अ) मनुष्य स्वयं को नहीं बचा सकता (1) अच्छा होना पर्याप्त नहीं है (यशायाह 64:6)

(2) अच्छा करना पर्याप्त नहीं है (इफि. 2:9)

(3) बुद्धि एवं ज्ञान पर्याप्त नहीं है (मत्ती 16:17, 1 कुरिन्थियों 1:21)

(ब) परमेश्वर के बिना उद्धार असम्भव है (लूका 18:26-27)

(स) परमेश्वर ने प्रभु यीशु मसीह के द्वारा सब मनुष्यों के लिए उद्धार उपलब्ध कराया।

(1) परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया (यूहन्ना 3:16)

(2) जब हम पापी ही थे तभी मसीह हमारे लिए मरा (रोमियों 5:8)

(3) प्रभु यीशु मसीह ने हमारे पापों को अपने ऊपर उठा लिया एवं पापों का दण्ड हमारे बदले क्रूस पर अपना रक्त बहाकर चुकाया (1 पतरस 2:22-24)

(4) प्रभु यीशु मसीह हमारे पापों के लिए मारा गया, गाड़ा गया; और पवित्र शास्त्र के अनुसार तीसरे दिन जी भी उठा। (1 कुरिन्थियों 15:3-6)

(5) परमेश्वर तक पहुंचने का एकमात्र मार्ग प्रभु यीशु मसीह ही है (यूहन्ना 14:6)

- □□□□□□□□□□ □□ □□□□□□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□□□□□□ □□□□□□ □□□□

(अ) उद्धार परमेश्वर के अनुग्रह का वरदान है (रोमियों 6:23, इफि. 2:8)

(ब) उद्धार विश्वास के द्वारा ही पाया जा सकता है

(प्रेरितों के काम 16:31, रोमियों 10:9)

(स) उद्धार परमेश्वर के साथ अनन्त जीवन को लाता है

(यूहन्ना 3:16; 1:12)

द्वारा लखिति सी.आई.सी.□ म.
मंगलवार, 29 अगस्त 2006 16:57 - अंतमि अद्यतन गुरुवार, 20 मार्च 2008 18:57

अधकि जानकारी □ वं पत्राचार पाठ्क्रम केलयि सम्□ पर्क कीजयि□ - साहति्□ य □ वं प्रकाशन वभिाग
सेन्□ ट्रल इण्डयिा क्रशि्चयिन मशिन
पोस्□ ट बाक्□ स – 11, दमोह (म.प्र.) 470661 फोन : 07812-222500 फैक्□ स : 07812-223301